

रामायण

“राम” एक मंत्र, एक जादुई शब्द, मूर्तिमान ईश्वर, सर्वव्यापक, जो मिट्टी के कण-कण में विद्यमान है, एक कुलीन राजा, सुशील राजकुमार, नील वर्ण देवता, जो विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं में अखंडता पैदा करते हुए देशभर में भ्रमण करता है। रामायण, राम की कथा है, जो सर्वप्रथम 500 ईसा पूर्व वाल्मीकि द्वारा लिखी गई और संभवतः उससे पहले और उसके बाद भी अनेकों बार कही गई। यह इस सरल कथा की शक्ति और अपील है, लेकिन यह एक ऐसे नायक की कहानी है जिसने अपने जीवन में बहुत सी प्रतिकूलताओं का सामना किया और आज तक भी इस कथा के समान कोई और कथा नहीं लिखी गई है। यह कथा न केवल भारत में लाखों लोगों को प्रिय है, बल्कि अब यह विश्वभर में व्यावहारिक रूप से लोकप्रिय है। सूरीनाम, फिजी, गुयाना, मारीशस आदि देशों में बहुत पहले गए प्रवासी अपने दिलों में इस कथा को अपने साथ ले गए और जो अपनी प्यारी मातृभूमि से दूर उनके जीवन का संबल बनो। बर्मा, इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस, फिलिपीन्स, थाईलैंड, मलेशिया और वियतनाम जैसे बहुत से एशियाई देशों ने इस कथा को अपनी-अपनी स्थानीय विशिष्टताएं देते हुए अपनाया और इसे अंतरराष्ट्रीय बनाया। देश के अंदर भी भिन्न सांस्कृतिक और मानवजातीय समूहों ने बड़े प्यार से इस कथा को अपनाया, इसे अपने स्थानीय सांस्कृतिक ढांचे के अनुकूल बनाया, उनके वृत्तान्तों में कतिपय घटनाओं अथवा पात्रों को उजागर किया और इस प्रकार महान रामायण परम्परा को समृद्ध बनाया। जबकि वाल्मीकि रामायण संस्कृत में है और इसमें एक सरल वृत्तान्त है, वहीं अन्य भिन्न भाषाओं में अन्य रूपान्तरण हैं, जैसे अध्यात्म रामायण जिसकी रचना व्यास द्वारा की गई मानी जाती है, तमिल में 12वीं सदी में कवि कंबर द्वारा लिखी गई कम्बर रामायण, बंगाली में कृतिबास ओझा द्वारा लिखी गई कृतिवासी रामायण आदि। लेकिन अवधी भाषा में 15वीं सदी में तुलसीदास द्वारा लिखी गई “रामचरितमानस” सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। तुलसी रामायण अथवा रामचरितमानस में सर्वोत्तम मानव गुणों, निष्ठा अथवा भक्ति की शक्ति और प्रचलित सामाजिक परम्पराओं तथा शिष्टाचार आदि पर बल दिया गया है। इस बात पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया है कि धर्मपरायण व्यक्ति किस प्रकार अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

वाल्मीकि द्वारा वर्णित, कथा का मूल विषय अयोध्या के राजकुमार राम की कथा है, जो मर्यादाओं का पालन करते हैं। रामायण की कथा जैसे-जैसे आगे बढ़ती है उसमें बहुत से ऐसे उदाहरण हैं जो धैर्य और स्थितप्रज्ञता को प्रतिबिम्बित करते हैं, जिससे राम “मर्यादा पुरुषोत्तम राम” के रूप में चित्रित होते हैं।

महर्षि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को अपने शिष्यों के रूप में स्वीकार करते हैं तथा विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करने के लिए विशेष विद्या प्रदान करते हैं। एक दिन वे मिथिला पहुंच गए। राजा जनक उनका स्वागत करने के लिए आए और वे अयोध्या के दो राजकुमारों की कांति देखकर मंत्रमुग्ध हो गए। उन्हें “शिव-धनुष” दिखाया गया, जो लौह-मंजूषा में रखा हुआ था। राजा जनक और उनकी पत्नी सुनयना ने यह घोषणा की कि वे अपनी सुपुत्री का विवाह ऐसे व्यक्ति से करेंगे जो “शिव धनुष” पर प्रत्यंचा चढ़ाएगा। राम ने बिना किसी प्रयत्न के यह कर दिखाया। राजा जनक की खुशी की कोई सीमा न रही और उन्होंने अपनी सुन्दर पुत्री, सीता का विवाह राजकुमार राम के साथ कर दिया।

राजा दशरथ राम को अयोध्या का ‘युवराज’ घोषित करना अथवा उनका राज्याभिषेक करना चाहते थे। लेकिन, मंथरा, रानी कैकेयी की दासी ने सोचा कि राजा दशरथ अपने निर्णय में राम की तरफदारी कर रहे हैं और उसने अपनी स्वामिनी के दिमाग में जहर भर दिया। कैकेयी उसके प्रभाव में आ गई और उसने यह वर मांगा कि उसके अपने पुत्र, भरत को अयोध्या का भावी राजा बनाया जाए। उसकी दूसरी मांग यह थी कि राम को चौदह वर्षों के लिए अयोध्या से निर्वासित किया

जाए। राजा दशरथ हतप्रभ हो गए, लेकिन कैकेयी को समझाने व उसका इरादा बदलने में विफल रहे। राम अपने पिता के प्रति समर्पित थे और उन्होंने अपनी पत्नी सीता और अपने भाई लक्ष्मण को साथ लेकर अयोध्या छोड़ दी।

राम, सीता और लक्ष्मण ने चित्रकूट में आश्रय लिया। भरत तुरन्त चित्रकूट पहुंच गए और राम से वापस अयोध्या लौटने का अनुरोध किया और राम को अपने पिता के देहान्त का दुखद समाचार भी दिया। राम चौदह वर्षों से पहले अयोध्या वापस न लौटने के अपने निर्णय पर दृढ़ थे। भरत ने राम को लकड़ी की अपनी चरण पादुका देने का अनुरोध किया, जिसे वे चौदह वर्षों तक सिंहासन पर रखेंगे।

केवट नाविक था, जो लोगों को पवित्र नदी गंगा के पार ले जाता था। इसी की नाव में बैठ कर राम, सीता और लक्ष्मण ने नदी पार की थी। शबरी, ऋषि मातंग की शिष्या थी, जो पम्पा सरोवर के पास झोपड़ी में रहती थी। वह वृद्ध और बीमार थी और उसकी एकमात्र इच्छा मृत्यु से पूर्व राम से मिलने की थी। वह अपनी झोपड़ी में राम को देखकर अभिभूत हो गई और उनके प्रति अपने अगाध प्रेम के वशीभूत होकर उसने उन्हें स्वयं बेर चखने के बाद मीठे बेर खिलाए।

बाद में, दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारण, लंका के राजा, रावण द्वारा बलपूर्वक सीता का हरण कर लिया गया। उनकी चीख सुनकर साहसी पक्षी ‘जटायु’ ने जबब में रथ पर सवार रावण पर आक्रमण किया, लेकिन रावण ने उसके पंख काट दिए। घायल होकर वह जमीन पर गिर पड़ा और जिंदा रहने के लिए संघर्ष करने लगा। वह इस अनर्थ के बारे में राम को बताकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

सीता को ढूंढने के लिए हनुमान को लंका में भेजा गया। वे आकाश की ओर कूदे और लंका की तरफ उड़ गए। उन्होंने सीता को अशोक बाटिका में देखा और वे बड़ी सतर्कता से सीता के सामने प्रकट हुए तथा सावधानीपूर्वक स्वयं का परिचय दिया। उन्होंने उनका विश्वास प्राप्त करने के लिए राम की अंगूठी दिखाई। सीता अभिभूत हो गई और उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ गए।

लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद, राम अयोध्या वापस आ गए और उन्होंने बहुत लंबे समय तक राज किया। “राम-राज्य” के दौरान अयोध्या बहुत समृद्ध हो गई। वहां कोई दुःखी नहीं था। जनता स्वस्थ और सुखी थी। राम एक योग्य राजा थे, जो न्याय और समानता में विश्वास करते थे। तुलसीदास की “रामचरितमानस” के “उत्तरकांड” में और “भास” की “उत्तर रामचरित” में कथा और आगे बढ़ती है। इसमें ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में वन में सीता के जीवन के बारे में बताया गया है।

रामायण ‘मर्यादा पुरुषोत्तम राम’ की कथा है, जिन्होंने धर्म के न्यायसंगत मूल्यों को कायम रखा। यह एक आदर्श राजा, विनम्र शासक, सामाजिक मूल्यों के संरक्षक और इन सबसे ऊपर एक पराक्रमी व भद्र पुरुष की कहानी है। राम कथा को अलग-अलग समय और अलग-अलग स्थानों पर अनेकों बार कहा गया है। यह एक प्रेरक, शक्तिदायिनी और मंत्रमुग्ध कर देने वाली कथा है जो भविष्य में भी कही जाती रहेगी।

भारतीय डाक, पवित्र रामायण के महत्वपूर्ण दृष्टान्तों को दर्शाते ग्यारह डाक-टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	: इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/शीटलेट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका विवरण	: श्री संखा सामंत श्रीमती अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 1500 पैसा (1), 500 पैसा (10)
Denomination	: 1500 p (1), 500 p (10)
मुद्रित मिनियेचर शीट्स	: 3.0 लाख
Miniature sheets printed	: 3.0 lakh
मुद्रित शीटलेट्स	: 7.0 लाख
Sheetlets printed	: 7.0 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Ramayana

"Ram", a chant, a magic word, the divine personified, the omnipresent who is there in every grain of sand, a noble king, a gentle prince, the blue deity who roamed across the country carrying the people of different cultures along. Ramayana, the story of Ram composed first by Valmiki around 500 b.c., has possibly many retellings before that as well as afterwards. Such is the power and the appeal of this simple story, but a story of a hero who suffers many adversities in life, which remains, to this date, unsurpassed. The story is loved by the millions not only in India, but now, practically all across the globe. Early migrants to Surinam, Fiji, Guiana, Mauritius etc. carried the story in their hearts that sustained them away from their beloved motherland. Many Asian countries such as Burma, Indonesia, Cambodia, Laos, Philippines, Thailand, Malaysia and Vietnam have adopted and internalized the story giving them local flavours. Within the country also different cultural and ethnic groups have lovingly adopted this story, adapted to the local cultural frameworks, selectively highlighting certain events or characters in their narratives and thereby enriching the great Ramayana tradition. While Valmiki Ramayana is in Sanskrit and follows a simple narrative, there are other versions in different languages such as Aadhyaatm Ramayana supposedly composed by Vyasa, Kamba Ramayana written by poet Kambar in 12th century in Tamil, Krittivasi Ramayana written by Krittibas Ojha in Bengali etc. But the most overwhelmingly popular has been the Ramcharitmanas written by Tulsidas in 15th Century in Awadhi. Tulsi Ramayana or Ramcharitmanas emphasizes the supreme human qualities, the power of devotion or bhakti and the importance of the popular social norms and proper conduct etc. The focus is more on how the righteous carries out his duties.

The basic storyline, as narrated by Valmiki is the story of Ram, the prince of Ayodhya who practices the ideal code of conduct. The progressively nuanced story of Ramayana has many instances that reflect upon equanimity and mental equipoise depicting Ram as 'Maryada Prushottam Ram.'

Maharishi Vishwamitra takes Ram and Laxman as his disciples teaching them the intricacies of using various arms and weapons. One day they reach Mithila. The king, Janak, came to welcome them and he was spell-bound by the radiance of the two Ayodhya princes. They were shown the 'Shiva-dhanush' which was kept in an iron case. King Janak and his wife Sunaina had announced that they would marry their daughter Sita to anyone who could mount the arrow on the 'Shiva-dhanush.' Ram did this effortlessly. King Janak's happiness knew no bounds and he married his beautiful daughter, Sita to prince Ram.

King Dashrath wished to declare Ram as the 'Yuvraj' or the 'Crown prince' of Ayodhya. But, Manthara, the maid of queen Kaikeyi, felt that king Dashrath had been partial in his decision and she poisoned the mind of her mistress. Kaikeyi came under her influence and demanded that, Bharat, her own son should be made the future king of Ayodhya. Her second wish was, the

banishment of Ram from Ayodhya for fourteen years. King Dashrath was crest-fallen but, was unable to persuade Kaikeyi to change her mind. Ram was devoted to his father and left Ayodhya accompanied by his wife, Sita and his brother, Laxman.

Ram, Sita and Laxman had found shelter in Chitrakut. Bharat soon reached Chitrakut and begged Ram to return to Ayodhya while also informing Ram about the sad demise of their father. Ram was firm on his decision not to return to Ayodhya before fourteen years. Bharat requested Ram to give his 'wooden paduka' which he would keep upon the throne for fourteen years.

Kewat was the boat man who ferried people across the holy river Ganga. It was in his boat that Ram, Sita and Laxman crossed the river. Shabari was the disciple of sage Matang who lived near Pampa lake. She was old and sick and her only desire was to meet Ram before dying. She was overwhelmed to see Ram in her hut and out of sheer love, she fed him sweet berries after tasting them.

Later, due to unfortunate turns of events, Sita was taken forcefully by Ravana, the king of Lanka. The valiant bird 'Jatayu' answered to her screams by attacking Ravana's chariot but Ravana cut off his wings. Wounded, he fell to the ground and struggled to keep alive. He died after informing Ram about the catastrophe.

Hanuman was sent to search for Sita in Lanka. He took a leap towards the sky and flew towards Lanka. He saw her in Ashok Vatika and appeared before her cautiously and carefully introducing himself. He showed a ring of Ram to gain her trust. Sita was overwhelmed and had tears of joy in her eyes.

After conquering Lanka, Ram returned to Ayodhya and ruled over for a long time. During 'Ram Rajya', Ayodhya became very prosperous. There was no sorrow. People were healthy and happy. Ram was an able king who believed in justice and equality. In the 'Uttar Kand' of Tulsidas's Ramcharitmanas and in Bhasa's Uttar Ramcharit the story further progresses depicting Sita's life in the jungle in the ashram of the sage Valmiki.

Ramayana is a story of Maryada Purushottam Ram, upholder of righteous values of Dharma. This is a story of an ideal king, a noble ruler, a protector of social values and above all of a brave and gentle person. The story has been told and retold in different times and different places. The inspiring, empowering and enchanting story will enthrall millions for all times.

India Post is pleased to release a set of eleven stamps depicting significant instances from Ramayana.

Credits:-

Text	: Based on the material available on internet
Stamp / Miniature Sheet/Sheetlet/ FDC/Brochure	: Sh. Sankha Samanta
Cancellation Cachet	: Smt. Alka Sharma

